ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

खेतड़ी की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत: पर्यटन संभावनाएं

विरेन्द्र कुमार चान्देला, सहायक आचार्य, इतिहास, शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

खेतड़ी राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है, इसे ताम्र नगरी एवं झुंझुनू का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है । खेतड़ी अपने किलों, महलों, मंदिरों और सांस्कृतिक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध है । इसकी समृद्ध साांस्कृतिक विरासत है, जो पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है । इस शोध पत्र का उद्देश्य व्यापक केस स्टडी के माध्यम से खेतड़ी में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत स्थलों की जानकारी प्राप्त कर पर्यटन की संभावना को तलाशना है । यह अनुसांधान खेतड़ी में साांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने और बनाए रखने मेंआने वाली चुनौतियों की जाांच करता है और इसके भविष्य के विकास के लिए सिफारिश प्रदान करता है । इस अध्ययन के निष्कर्ष खेतड़ी में आर्थिक विकास सांस्कृतिक संरक्षण के इंजन के रूप में सांस्कृतिक पर्यटन का लाभ उठाने के अवसरों और बाधाओं की गहरी समझ में योगदान करेंगे।

खेतड़ी राजस्थान के झुंझुनू जिले में स्थित एक प्रमुख क्षेत्र है । यह अपनी जीवंत ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है । खेतड़ी अपने इतिहास, संस्कृति और विशेष भौगोलिक परिस्थितियों की वजह से देशी और विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। खेतड़ी की प्राकृतिक सुंदरता जहां लोगों को अपनी ओर खिंचती है, वहीं इसके ऐतिहासिक स्थल एवं सांस्कृतिक स्थल भी प्रसिद्ध हैं । भौगोलिक दृष्टि से इस क्षेत्र में मरुस्थलीय भूमि, अरावली पर्वतमाला की पहाड़ियां एवं मैदानी तीनों प्रकार की स्थलीय आकृतियां मौजूद हैं, ऊंचे टीलों एवं पहाड़ों का संगम देखने लायक है । जहां विभिन्न प्रकार की वनस्पति एवं जीव जंतु और प्राकृतिक दर्शनीय स्थल पाए जाते हैं । जो इसे विशेष क्षेत्र बनाती है । इस विशेषता के साथ ही इसकी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत इस क्षेत्र में पर्यटन को बढ़ावा देने की संभावनाओं को बहुत ज्यादा बढ़ाती हैं ।

खेतड़ी में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन के आकर्षण :

खेतड़ी सांस्कृतिक पर्यटन आकर्षणों का खजाना है, जो आगंतुकों को लुभाने वाले विविध प्रकार के अनुभव प्रदान करता है । खेतड़ी के ऐतिहासिक स्थल, त्यौहार, मेले और मंदिर इसकी समृद्ध साांस्कृतिक छवि में योगदान करते हैं । यह खंड इन आकर्षणों की विस्तार से पड़ताल करता है, उनके महत्व और पर्यटकों को आकर्षित करने पर प्रकाश डालता है ।

सुनारी सभ्यता झुंझुनूं जिले की खेतड़ी तहसील में कांटली नदी तट पर अस्तित्व में आई। सुनारी व जोधपुरा गांवों से उत्खनन से इस स्तर में जो महत्वपूर्ण साक्ष्य प्राप्त हुए हैं, व यहां अयस्क से लौह धातु बनाने वाली भट्टियों के अवशेष प्राप्त हुए है । इस प्राप्त लौह धातु से लौह उपकरण भी इन्हीं भट्टियों के पास दूसरी भट्टियों द्वारा बनाए जाते थे । यहां से शुंग व कुषाण कालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त होते हैं ।

भोपाल गढ़ - खेतड़ी का गढ़, जिसे भोपालगढ़ के नाम से भी जाना जाता है,
एक ऐतिहासिक दुर्ग है । यह खेतड़ी के शासकों द्वारा बनवाया गया एक ऐतिहासिक दुर्ग है
और इसका ऐतिहासिक महत्व है । खेतड़ी के किले में स्थित शीशमहल महल, मोती महल, गोपीनाथ मंदिर, शिव मंदिर, रानी सती मंदिर अपनी सुंदर वह अद्भुत वास्तु कला के उदाहरण हैं । यह अपनी सुंदर चित्रकारी और जटिल डिजाइन के लिए प्रसिद्ध हैं । भोपालगढ़ का यह किला अपनी वास्तुकला, इतिहास, और स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है, और यह पर्यटकों के लिए एक आकर्षण का केंद्र है । यद्यपि वर्तमान में इसके संरक्षण की आवश्यकता है ।

फतेह बिलास महल (रामकृष्ण मिशन) - शहर के प्रमुख ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थलों में रामकृष्ण मिशन का एक उल्लेखनीय स्थान है । जो खेतड़ी के राजा के पूर्व निवास फतेह बिलास पैलेस में स्थित है । खेतड़ी के अंतिम राजा सरदार सिंह जी ने 1958 में महल को रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ को दान कर दिया । राजस्थान में रामकृष्ण मिशन की पहली शाखा 1959 में ऐतिहासिक फतेह विलास पैलेस में स्थापित की गई । इस भव्य भवन में स्वामी विवेकानंद संगमरमर की मूर्तियां स्थापित की गई । जिस कमरे में स्वामी विवेकानंद रहा करते थे, उसे प्रार्थना कक्ष में बदल दिया गया । फतेह विलास महल में स्थित इस केंद्र को

राजस्थान सरकार द्वारा 'प्रतिष्ठित स्मारक और विरासत स्थल' के रूप में मान्यता दी गई है । यह आध्यात्मिक, सेवा, इतिहास और संस्कृति का एक अनूठा मिश्रण है । फतेह विलास पैलेस में अब अजीत-विवेक संग्रहालय है । जिसमें आकृतियां, तस्वीरें, पत्रों, पुस्तकों और पांडुलिपियों का संग्रह प्रदर्शित किया गया है । ऐतिहासिक महल परिसर के भीतर ओपन-एयर थिएटर में एक आकर्षक स्थायी प्रकाश और ध्वनि शो का उद्‌घाटन 2023 में किया गया । जो राजा अजीत सिंह और स्वामी विवेकानंद के बीच के संबंधों से परिचित कराता है । इस ऑडियो-विजुअल तमाशे से सभी उम्र के लोग आकर्षित होते हैं और अपनी इतिहास और संस्कृति के बारे में आगंतुकों में गर्व की भावना पैदा करता है जो स्वामी विवेकानंद के जीवन व शिक्षाओं को समर्पित है ।

बागोर का किला खेतड़ी से लगभग तीन मील दूरी पर स्थित यह प्रसिद्ध किला है । राजस्थान के प्रसिद्ध गढ़ चित्तौड़गढ़ और रणथंबोर की तरह बागोर का किला भी दुर्गम और प्राचीनता का प्रतीक है । प्राचीर की ओट में किला अपने आप में इतना आत्मनिर्भर और सुरक्षित बना है कि इसमें शानदार महल वह बगीचा भी था । बाद में खेतड़ी के राजाओं का प्रमुख आश्रय स्थल बन गया था । बागोर का किला अपनी मजबूती के लिए प्रसिद्ध था, किला इतना लंबा चौड़ा है जिसमें पूरा शहर भी बस सकता था और खेती भी की जा सकती थी । आज यह किला संरक्षण व पुनरोद्‌धार की बाट जोह रहा है । इसके अलावा बबाई, सिहोड़ आदि में भी स्थानीय ठाकुरों के अधीन छोटे किले बनाए गए थे जो आज जीर्ण शीर्ण अवस्था में है, जिनके पुनरुद्‌धार की जरूरत है ।

खेतड़ी क्षेत्र के प्रमुख ऐतिहासिक जल संरक्षण के स्थल-

खेतड़ी के ऐतिहासिक तालाब, कुएं-बावड़िया और बांध जल संरक्षण के बेजोड़ उदाहरण है । खेतड़ी के राजा महाराजाओं एवं सेठ साहूकारों ने यहां पर जल संरक्षण के लिए
बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया । ऐतिहासिक पन्ना सागर तालाब जिसका निर्माण सेठ पन्नालाल शाह ने करवाया था । यह तालाब अपनी कलाकृति एवं भव्यता का बेजोड़ नमूना है । इसके चारों ओर ऊंची दीवारें, स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग-अलग घाट, परिभ्रमण के लिए चारों तरफ पक्का फर्श, रहने के लिए बारहदरी तथा तिबारियां बनी हुई है । तालाब पर विष्णु भगवान की जगह-जगह मूर्तियां लगी हुई । बारिश के पानी संग्रहण का यह पूरे विश्व में एक अद्‌भुत उदाहरण है । तालाब के पीछे पक्की नहरें बनी हुई हैं । नहरों के बीच में प्राकृतिक फिल्टर प्लांट लगा हुआ है, जो तत्कालीन समय का वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम व वर्षा जल संग्रहण का बेजोड़ नमूना है । यह भारत के सबसे सुंदर तालाबों में से एक है, जो पर्यटकों को अपनी और आकर्षित करता है ।

महाराजा अजीतसिंह सिंह द्वारा बनवाया गया अजीत सागर बांध जो झुंझुनू जिले का सबसे बड़ा बांध है । यद्यपि आज बांध के कैचमेंट क्षेत्र में बने एनीकट, विलायती कीकर व कम बरसात के कारण बांध सूखा पड़ा । इनके अलावा माझी शाह बांध, काला भुजा बांध, समदेड़ा तालाब ऐतिहासिक एवं जल संरक्षण के स्रोत थे । तालाब व बांधों के अलावा यहां की बावड़िया भी ऐतिहासिक रही है, जिनमें बबाई की सात मंजिला बावडी जो वर्तमान में जीर्ण शीर्ण अवस्था में है एवं जसरापुर की बावड़ी प्रसिद्ध है ।

खेतड़ी तांबा प्रोजेक्ट - खेतड़ी में तांबा हड़प्पा सभ्यता के काल से ही निकाला जा रहा है, हड़प्पा स्थलों पर तांबा यहीं से भेजा जाता था । खेतड़ी तांबा प्रोजेक्ट की स्थापना 1967 में की गई । इसके बाद यहां वृहद स्तर पर तांबे की खुदाई की गई । यहां की प्रसिद्ध खानों में खेतड़ी की खदान, बनवास एवं कोलिहान की खान प्रसिद्ध है ।

प्रमुख धार्मिक स्थल मंदिर व तीर्थ स्थल -

खेतड़ी शहर के प्रमुख धार्मिक मंदिरों में देखा जाए तो रघुनाथ जी का मंदिर जो एक ऐतिहासिक मंदिर है, जिसमें भगवान श्री राम एवं लक्ष्मण के विग्रह को मूंछों में दिखाया गया है । संभवतः ऐसा प्रदेश का एकमात्र मंदिर है । वाराही माता का एकमात्र ऐतिहासिक मंदिर जिसमें मां वार्ताली वाराही के अवतार में मनुष्य के शव पर विराजमान है । खेतड़ी-नीमकाथाना रोड पर झोझू धाम में प्रसिद्ध सिद्धि विनायक मंदिर जो लोगों का आस्था का केंद्र है । हनुमानगढ़ी मंदिर जो संभवतः अयोध्या के बाद प्रदेश का एकमात्र हनुमानगढ़ी का मंदिर है । ये सभी मंदिर धार्मिक एवं पर्यटन दोनों ही दृष्टि से प्रमुख स्थल है ।

ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, January-June 2025, Submitted in January 2025

रामेश्वरदास मंदिर राजस्थान हरियाणा सीमा पर स्थित बसई गांव में यह बड़ा ही भव्य मंदिर है । दुग्धभागा नदी के किनारे बना यह रमणीक धाम बाबा रामेश्वरदास की तपो स्थली रहा है । यहां काफ़ी भव्य मूर्तियाँ है । यहां नंदी जी की 25 फुट लंबी, 15 फुट ऊँची व 20 फुट चौड़ी भव्य प्रतिमा स्थापित है । 10 फुट ऊँचा शिवलिंग है, जहां भक्तजन पानी चढ़ाते है । मंदिर के मुख्य द्वार पर 40 फुट ऊँची हनुमान जी की मूर्ति स्थापित है । रामेश्वरदास मंदिर परिसर में श्री गणेश जी की भी बहुत बड़ी प्रतिमा के साथ साथ गजानन की भी बहुत विशालकाय प्रतिमा है । एक हाल में भगवान जी की मूर्तियों कि साथ संपूर्ण रामायण में दर्शाए गए चित्रों को लगाया गया है । रामेश्वरदास मंदिर परिसर के कई और कक्षों में हिंदू धर्म की पौराणिक कथाओ को अंकित किया गया है, इनकी शोभा देखने से ही बनती है । धाम में स्थित गीता भवन में श्रीमद् भागवत गीता के 18 अध्याय शीशे में उकेर कर लिखे गए हैं । इसमें चित्रकार ने शीशे में अंदर की तरफ उल्टे शब्द लिखे हैं, जो बाहर से एक-एक सीधे दिखते हैं । इस प्रकार कलाकृति को देखने के लिए दर्शनार्थी दूर-दूर से आते हैं । सम्पूर्ण मन्दिर में दीवारों पर हजारों भित्ती चित्र बने हुए हैं । इनमे हजारों देवी-देवताओं, समस्त ऋषियों, महात्माओं, शक्ति पीठों, नव दुर्गा के चित्र बने हुए हैं ।

रामेश्वर दास मंदिर बसई। खाखी धाम

सवाई सुंदर दास जी महाराज का मंदिर - यह मंदिर खेतड़ी के गाडराटा गांव में स्थित है । यह मंदिर दादूपंथी संत योगीराज बाबा सवाई सुंदर दास जी महाराज को समर्पित है, जो अपने आध्यात्मिक उपदेशों और समाज सेवा के लिए प्रसिद्ध थे । मंदिर पहाड़ी की तलहटी में स्थित है, पास की हरितमा युक्त पहाड़ी मंदिर की भव्यता को ओर बढ़ा देती हैं । इसके पास में ही पहाड़ी पर चामुंडा माता का प्रसिद्ध मंदिर है, जो बड़ा ही रमणीय एवं दर्शनीय स्थल है । भाद्रपद माह में बाबा सुंदर दास का पांच दिवसीय लक्खी मेला लगता है, जिसमें दूर-दूर से लोग दर्शनार्थ आते हैं । मेले में क्षेत्र की संस्कृति की सम्पूर्ण झलक नजर आती है ।

भूर भवानी माता का मंदिर बबाई गांव की पश्चिम दिशा में पहाड़ी पर यह बहुत ही भव्य एवं पवित्र माता का मंदिर स्थित है । बबाई की पहाड़ियां अरावली की उत्तर में स्थित सर्वोच्च पहाड़ियां हैं । मंदिर से दूर-दूर के गांवों का मनोरम नजारा देखा जा सकता है।

खाखी बाबा मंदिर राजस्थान के झुंझुनू जिले की खेतड़ी तहसील के डाडा फतेहपुरा पंचायत में स्थित एक प्राचीन धार्मिक स्थल है । यह मंदिर लगभग 50 वर्ष पुराना है और स्थानीय भक्तों के लिए आस्था का प्रमुख केंद्र है ।

ढौसी तीर्थ स्थल राजस्थान-हरियाणा सीमा पर स्थित यह एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है, जो ढौसी गांव में स्थित है । यह स्थान विशेष रूप से वैदिक काल से जुड़ा हुआ है और यहां महर्षि च्यवन का आश्रम होने की मान्यता है । ढौसी पहाड़ी को अक्सर "च्यवन ऋषि की तपोभूमि" कहा जाता है और इसे आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माण के लिए प्रसिद्ध माना जाता है । ढौसी में एक प्राचीन कुंड और शिव मंदिर भी स्थित है, जहां श्रद्धालु स्नान और पूजा-अर्चना करने आते हैं । ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का यह क्षेत्र पर्यटकों और भक्तों के लिए आकर्षण का केंद्र है ।

ढौसी तीर्थ स्थल चौमुखा भैरव मंदिर। बूढ़ वाला बालाजी

चौमुखा भैरव मंदिर खेतड़ी से 9 किलोमीटर दूरी पर खरखड़ा में प्रसिद्ध चौमुखा भैरव मंदिर है मान्यतानुसार यह भैरव (शिव भगवान का एक स्वरूप) द्वापर युग से अपना संबंध रखता है । रमणीय पहाड़ी की तलहटी में स्थित यह मंदिर लोगों को अन्नायास ही अपनी और आकर्षित कर लेता है । खेतड़ी में दूसरा प्रमुख भैरव मंदिर मोड़की ग्राम में स्थित है, जो ऊंचे टीलों एवं पहाड़ों के संगम के बीच बना हुआ है । ऊंची पहाड़ी पर स्थित मंदिर भेरुजी एवं भगवान देवनारायण का मंदिर है मान्यतानुसार यहां भगवान देवनारायण पृथ्वी को फाड़कर साक्षात प्रकट हुए थे । यहां से हमें एक ओर हरियाली से ढकी हुई ऊंची-ऊंची पहाड़ियां दिखाई देती हैं, तो दूसरी तरफ ऊंचे- ऊंचे टीले प्राकृतिक सौंदर्य की छटा बिखेरते नजर आते हैं । प्रकृति व आध्यात्मिकता का दर्शन करना हो तो यहां जरूर जाना चाहिए । अन्य मंदिरों एवं पवित्र स्थलों में बूढ़ वाला बालाजी धाम ग्राम नोरंगपुरा, शक्तिपीठ भिंठेरा, खाखी धाम मंदिर ग्राम डांडा फतेहपुरा, बाबा भैया का मंदिर ग्राम तातीजा प्रमुख हैं, जो आध्यात्मिकता के साथ साथ प्रकृति का सौंदर्य दर्शनार्थियों को प्रदान करते हैं ।

बाघेश्वर तीर्थ धार्मिक एवं भावात्मक एकता का प्रतीक बागेश्वर धाम खेतड़ी के निकट खरकड़ा गांव में दो पहाड़ों की सकरी घाटी में स्थित है यहां एक सतत प्रवाहमान जल स्रोत है, जो एक पहाड़ की खो में से निकलकर नीचे गिरता है । यहां एक प्राचीन मंदिर है, प्राचीन किवदंती के अनुसार नृसिंह भगवान ने हिरण्कश्यप का हृदय विदीर्ण करके अपने रक्त लिप्त नखों को इसी स्थान पर धोया था । आसपास के धार्मिक आस्था वाले लोग यहां आते रहते हैं ।

बागेश्वर तीर्थ के अलावा यहां अरावली की सुरम्य पहाड़ियों में अनेक सतत जल प्रवाह के स्रोत हैं, जिनके पास मंदिर एवं पवित्र कुंड बने हुए हैं । मान्यता अनुसार इन पहाड़ों में अनाम साधु संत तपस्यारत हैं । इनमें से प्रमुख धाम कुंडा धाम जो कालोटा ग्राम पंचायत के मंडाना ग्राम की पहाड़ियों में स्थित है, जहां पवित्र कुंड एवं मंदिर बने हुए हैं । इसी तरह अमरकुंड जो खेतड़ी के भोपालगढ़ किले के समीप स्थित है, जहां गोमुख से लगातार पवित्र पानी बहता रहता है । प्रतापपुरा ग्राम में आकावाली की तरफ जाने वाले रास्ते में मनमोहक कदम के पेड़ों के झुरमुट को पार करने के बाद ऊखल-मूसल नाम के पवित्र कुंड है, जहां ग्रीष्म ऋतु में भी पानी का प्रवाह बढ़ जाता है । माधोगढ़ का धारेश्वर धाम जहां गंगा के समान ही अमृत जल लगातार प्रवाह करता रहता है, बहुत ही बड़ा आध्यात्मिक स्थान है, जहां भाद्रपद माह में विशाल मेला लगता है । इस प्रकार यह तीर्थ स्थल आध्यात्मिकता के साथ-साथ प्रकृति का सौंदर्य भी निहारने का मौका हमें देते हैं । ये सभी स्थान खेतड़ी में फैली हुई अरावली पर्वतमाला की रमणीय उपत्यका में बसे हुए हैं । ये सभी तीर्थ स्थल गगनचुम्बी पहाडों की गोद में बसे प्राकृतिक सौन्दर्य के अनुपम बीज मोती से चमकते नजर आते है । हरे-भरे पहाड, टेढ़े-मेढ़े रास्ते, सुरम्य और मनोहारी ये मंदिर एवं पवित्र स्थल दर्शनार्थियों और पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र है तथा ये पवित्र स्थल थके हुए पर्यटकों व दर्शनार्थियों की थकान हर लेते है।

खेतड़ी में सांस्कृतिक पर्यटन की अपार संभावनाएं हैं । राजस्थान के अन्य भागों की तरह खेतड़ी भी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक समृद्धि से भरपूर है, जो पर्यटन क्षमता का अधिकतम उपयोग किए जाने पर स्थानीय लोगों, राज्य और राष्ट्र के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी हो सकता है । ऐसा कोई गांव, कोई बस्ती या कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है, जिसमें सांस्कृतिक सौंदर्य, सांस्कृतिक विरासत या सांस्कृतिक पर्यटन स्थल न हो । इतना होते हुए भी बहुत सी चुनौतियां है, जो इसके वैभव को प्रसारित होने में बाधा पैदा करती हैं । खेतड़ी में ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देने में प्राथमिक चुनौतियों में से एक अपर्याप्त बुनियादी ढांचा है, विशेष रूप से दूरस्थ और ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क संपर्क और सार्वजनिक परिवहन सहित अपर्याप्त परिवहन सुविधाएं पर्यटन स्थलों तक पर्यटकों की पहुंच को बाधित करती हैं । इसके अतिरिक्त विरासत स्थलों पर उचित आवास, आगंतुक सुविधाओं और व्याख्या केंद्रों की कमी समग्र पर्यटक अनुभव को प्रभावित करती है । खेतड़ी के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के स्थलों का वर्तमान में संरक्षण एवं देखरेख नहीं होने के कारण ये अपना वैभव खोते जा रहे हैं, जो एक चिंता का विषय है ।

खेतड़ी के आर्थिक विकास, सामुदायिक विकास और क्षेत्र की समृद्धि के लिए ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण कर सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है । क्षेत्र में केन्द्र सरकार द्वारा

क्रियान्वित 'स्वच्छ भारत योजना" को नियोजित तरीके से संचालित किया जाना चाहिए, जिसके तहत जलीय पर्यटन स्थलों के साथ-साथ अन्य ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्थलों पर स्वच्छता को विकसित किया जा सके । सांस्कृतिक विरासत और इसके संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन करना होगा। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम, कार्यशालाएं और इंटरैक्टिव अनुभव प्रदान करें, जो आगंतुकों को स्थानीय परंपराओं और रीति-रिवाजों से जुड़ने की अनुमति दें ।

सांस्कृतिक विरासत स्थलों, स्मारकों और कलाकृतियों के लिए प्रभावी संरक्षण और संरक्षण उपायों को लागू किया जाना चाहिए ।सांस्कृतिक संपत्तियों के सतत रखरखाव और सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए व्यापक विरासत प्रबंधन योजनाएं विकसित करना चाहिए । खेतड़ी बांसियाल कंजर्वेशन रिजर्व का विकास किया जाये तथा राजस्थान के अन्य क्षेत्रों में बनाए जाने वाले महोत्सव जैसे मरू महोत्सव थार महोत्सव मेवाड़ महोत्सव की तरह ही खेतड़ी महोत्सव या खेतड़ी विरासत उत्सव को और भी वैभवपूर्ण बनाया जाए, जिससे यहां पर दूर-दूर के पर्यटक और अधिक आकर्षित हो सके और यहां की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत के साथ-साथ प्राकृतिक सौंदर्य को निहार सके, जो पर्यटकों एवं क्षेत्र के आम जन दोनों के लिए ही लाभदायक रहेगा और खेतड़ी के पूर्व वैभव को पुनः लौटाया जा सकेगा ।

संदर्भ सूची-

1. खेतड़ी का इतिहास: पण्डित झाबरमल शर्मा
2. शेखावाटी वैभव: टी. सी. प्रकाश
3. शेखावाटी उद्गार
4. शेखावाटी दैनिक भास्कर
5. झुंझुनूं पत्रिका
6. इंटरनेट
7. शेखावाटी के प्रमुख दुर्ग: श्री ताराचंद प्रकाश
8. सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार जन सामान्य, पुजारी
9. श्री ताराचंद प्रकाश: शेखावाटी के प्रमुख दुर्ग
10. श्री गोविंद राम हरितवाल (लेखक,संपादक स्थानीय पत्रिका) से मौखिक साक्षात्कार